सम्पादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

कहानी प्रारम्भ में मनोरंजन का एक बड़ा साधन रही। यह मनोरंजन के साथ मानव भावनाओं को छूती हुई उसके ज्ञान में वृद्धि करती रही है। प्राचीन काल से ही यह कथा और किस्सों के रूप में कहानी ने हमें शौर्य, न्याय, ज्ञान व धर्म से अवगत कराया है।

हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास में भारत की प्राचीन कथाओं भारतीय कथा साहित्य, पाश्चात्य कथा साहित्य और लोक कथा साहित्य का सम्मिलित प्रभाव है।हिन्दी कहानी इन सबसे कुछ-न-कुछ तत्त्व लेकर ही स्वरूप ग्रहण कर सकी है। कहानी कहने और सुनने की चीज है। इस रूप में भारतीय समाज में कहानी का अस्तित्व काफी पुराना है। हिन्दी साहित्य में कहानी लिखने की परम्परा आधुनिक काल में शुरू हुई। भारतेन्दु युग में कुछ अनूदित कहानियों का प्रकाशन हुआ।भारतेन्दु युगीन साहित्यकार गदाधर सिंह ने बाणभट्ट की संस्कृत रचना कादम्बरी का लम्बी कहानी के रूप में हिन्दी अनुवाद किया था। उस काल में ऐसी ही अनेक संस्कृत रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद हुआ। आधुनिक युग की कहानियों पर संस्कृत और अन्य भाषाओं से अनूदित कहानियों का स्पष्ट प्रभाव पड़ा। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जिन कहानियों का विकास हुआ, वे कहानियाँ कहानी-कला की दृष्टि से अनूदित कहानियों से सर्वथा भिन्न हैं।

कहानी, हिन्दी में गद्य लेखन की एक विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य में एक नई विधा का विकास हुआ जिसे कहानी के नाम से जाना गया। बंगला भाषा में इसे गल्प कहा जाता है। कहानी ने अंग्रेजी से हिंदी तक की यात्रा बंगला के माध्यम से की। मनुष्य के जन्म के साथ ही साथ कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण से प्रत्येक सभ्य तथा असभ्य समाज में कहानियाँ पाई जाती हैं। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और सम्पन्न परंपरा रही है। परंपरागत रूप से दादी और नानी कहानी सुनाया करती थीं।

ISSN:2583-8849